INTERNATIONAL JOURNAL OF ENHANCED RESEARCH IN EDUCATIONAL DEVELOPMENT (IJERED)
VOL. 1 ISSUE 1, FEB.-2013 www.erpublications.com

महाकवि माघ की भक्ति भावना

डॉ. राका शर्मा

रीडर, संस्कृत–विभाग, एन.के.बी.एम.जी. कॉलेज, चन्दौसी

वैदिक काल से लेकर आज का कवि एवं भक्त उस असीम सत्ता के प्रति अपने हृदय की भावना को समर्पित करते आये हैं। कभी दासत्व के रूप में, कभी प्रणय निवेदन के स्वर में, कभी निर्गुण और कभी सगुण पद्धतियों से उस परम सत्ता के प्रति यह जीव अपनी श्रद्धा प्रकट करता आया है।

भक्ति वह भाव है जिससे आराध्य के प्रति तन्मीयता का उदय होता है। इस भक्ति में अद्वैत तो नही' होता परन्तु भक्तों की धारणा यह है कि "भक्त्यर्थे कल्पितं द्वैतम् अद्वैतादपिसुन्दरम।"

पुरूष सूक्त में ब्रह्म की सर्वव्यापकता का वर्णन किया गया है :–
सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठददशाङ्गुलम्।।
पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। 1
हिरण्यगर्भ सूक्त में भी बड़ी सुन्दरता के साथ इसी भावना की अभिव्यक्ति हुई है :–
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।
येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृलहा येन स्वः स्तमितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 2
एको देवः सर्वभूतेषु गूढः
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः
साक्षी चेताः केवलो निर्गुणश्च।।" 3

वह ब्रह्म स्वयं प्रकाश, सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापी है –
एषो ह देव प्रदिशो नु सवाः
पूर्वो ह जातः स 3 गर्भे अन्तः।
य एव जातः स जनिष्यमाणः
प्रत्यङ्जनांस्तिष्ठति सर्वतोमुखः।। 4

महाकवि माघ का शिशुपालवध महाकाव्य लिखने का मुख्य उद्देश्य यही था कि वह अपने आराध्य श्री कृष्ण भगवान के चरित्र का गुणगान करना चाहते थे। इसीलिए "कविवंशवर्णनम्" के अन्तिम श्लोक की पंक्ति में उन्होंने "लक्ष्मीपतेश्चरित कीर्तनमात्रचारू" ऐसा लिखा है।

काव्य में जहाँ–जहाँ भगवान् से सम्बन्धित बातें आई हैं, वहीं वहीं पर कवि का हृदय प्रफुल्लित हो कर भगवान् के तत्व तथा रहस्य को श्रद्धा के साथ प्रस्तुत करता है। कथानक में जहाँ कहीं विश्राम मिलता है, कवि भगवान् का गुणगान करना आरम्भ कर देता है।

भगवान् श्री कृष्ण इन्द्रप्रस्थ की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। उस समय भृत्यवर्ग ने सूर्य की धूप का निवारण करने के लिए उन पर छत्र लगा दिया। उनके दोनों ओर चंवर ढुल रहे हैं। उनके मस्तक पर मुकुट की मणियाँ रंग–बिरंगी धातुवाली थीं, कानों में मरकत मणि से जुड़े हुए सुन्दर कुण्डल थे, जिनकी पीत किरणें उनके नीले वक्षस्थल पर पड़कर मयूर–पिच्छ की भ्रान्ति पैदा करती थीं। उनकी दोनों भुजाओं में केयूर थे, वह मुक्ता माला धारण किए हुए थे, उन्होने कौस्तुभमणि भी धारण कर रखी थी। वे पीताम्बर पहने हुए थे। वे अपने हाथों में पॉच दिव्यास्त्र धारण किए हुए थे – सुदर्शन चक्र, कौमोदकी गदा, नन्दक खड्ग, शार्ंग धनुष तथा पांचजन्य शंख – वह सुदर्शन चक्र घूमते हुए किरण समूह से युक्त घेरे वाला था तथा स्फुरित होते हुए बड़े भंवर वाले यमुना के जल समूह के समान शोभित हो रहा था। श्रीकृष्ण भगवान् के 'पुष्परथ' का वर्णन भी कवि ने किया है। वे श्रीकृष्ण भगवान इष्ट की सिद्धि करने वाले, सब दिशाओं में बेरोकटोक जाने वाले तथा वेग से चलने वाले 'पुष्य' नामक रथ पर चढ़कर इस प्रकार शोभित हुए जिस प्रकार इष्ट सिद्धि करने वाले, सब दिशाओं की यात्रा में अनिषिद्ध एवं 'क्षिप्र' संज्ञक 'पुष्य' नक्षत्र पर गया हुआ चन्द्रमा सुशोभित होता है–

"रराज सम्पादकमिष्टसिद्धेः सर्वासु दिक्ष्वप्रतिषिद्धमार्गम्।
महारथः पुष्यरथं रथांगी क्षिप्रं क्षपानाथ इवाधिरूढ़ः।।" 5 शि.पा.व. 3/22

रथ पर चढ़कर श्रीकृष्ण भगवान् अपनी सेना सहित द्वारकापुरी से बाहर निकल रहे हैं, उसी में भक्त कवि को भगवान् द्वारा बनाई वेदों–पुराणों तथा शास्त्रों में वर्णित सृष्टि का स्मरण हो आता है और वह कह उठता है–

"प्रजाइवांगदरविन्दनाभेः शम्भोजटाजूटतटादिवापः।
मुखादिवाथ श्रुतयो विधातुःपुरान्निरीयुर्मरजिद्ध्वजिन्यः।।" 6

रैवतक पर्वत से इन्द्रप्रस्थ की ओर श्रीकृष्ण भगवान् अपनी सेना सहित प्रस्थान करते हैं। कवि ने मार्ग में चलती हुई सेना के क्रियाकलापों तथा मनो–विनोदों का सुन्दर वर्णन किया है। अश्वों, ऊँटो, रथों आदि के चलने के साथ–साथ गजों के चलने पर व्याकुल रमणियों का वर्णन करते हुए कवि श्रीकृष्ण के गुणगान में लग जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण के सगुण रूप का वर्णन करते हुए कवि ने विष्णु भगवान के विभिन्न अवतारों का वर्णन किया है । निम्न श्लोकों में वराहवतार रूप में स्तुति की गयी है–

निवेशयामासिथ हेलयोदधृतं
फणाभृतां छादनमेकमोकसः।
जगत्त्रयैकस्थपतिस्त्वमुच्चकै–
रहीश्वरस्तम्भशिरः सु भूतलम्। 7

नृसिंहावतार का वर्णन करते हुए कवि श्रीकृष्ण भगवान् की प्रशंसा करता है।8
निम्न श्लोकों में कवि द्वारा वामन, मोहिनी, दत्तात्रेय, परशुराम एवं कृष्ण अवतारों का वर्णन किया गया है। 9

श्रीमद्भागवत पुराण में भक्ति नवधा प्रकार की बताई गई है।
"श्रवणं, कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।
इति पुंसार्पिता विष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणा।
क्रियते भगवत्यद्धा तन्मन्येऽधीतमुत्तमम्।।" 10

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, भगवान् की चरण–सेवा, पूजन, वन्दन, भगवान में दासभाव, सखाभाव तथा अपने को समर्पण कर देने का भाव – ये ही नवधा भक्ति के रस हैं। इसके कई रूप महाकवि की कृति में मिलते हैं।

शिशुपाल श्रीकृष्ण के साथ युद्ध करने के इच्छुक है। युद्ध के नियमों के अनुसार वह शिशुपाल सात्यकि को दूत बनाकर श्रीकृष्ण के पास भेजता है। वहॉ पहुॅचकर सात्यकि का दूत–कृत्य एक संवाद में बदल जाता है। कवि को यहाँ कीर्तन के रूप में गुणगान का अवसर मिल जाता है–

"अधिवह्निपतंगतेजसो नियतस्वान्तसर्मथकर्मणः।
तव सर्वविधेयवर्तिनः प्रणतिं विभ्रति केन भूमृतः।।
जनतां भयशून्यधीः पररमिभूतामवलम्बसे यतः।
तव कृष्ण गुणस्ततो नरेरसमानस्य दधत्यगणयताम्।।" 11

युद्धभूमि में श्रीकृष्ण युद्ध कर रहे हैं, वहाँ भी कवि का मन उनका कीर्तन करने से नहीं भरता –

"चतुरम्बुधिगर्भधीरकुक्षेवपुषः सन्धिषु लीनतवेसिन्धोः।
उदगुः सलिलात्मनस्त्रिधाम्नो जलवाहावलयः शिरोरूहेभ्यः।।" 12

श्री कृष्ण भगवान् इन्द्रप्रस्थ में प्रविष्ट हो जाते हैं। यहाँ पर कवि युधिष्ठिर के रूप में उनके गुणों का गायन करता हुआ नहीं अघाता है। फिर श्रीकृष्ण की पूज्यता को सिद्ध करने के बहाने भीष्म के रूप में भी कवि भक्ति से विभोर होकर कीर्तन करने में तल्लीन है। चौदहवाँ सर्ग इस कीर्तन से भरा हुआ है।13

प्रभु को स्वामी तथा स्वयं को सेवक समझना दास्य भक्ति के लक्षण है।। महाकवि माघ की भक्ति कुछ–कुछ इसी प्रकार की है।

प्रभु के रूप, गुण प्रभाव नाम और रहस्य का प्रेम में मुग्ध होकर मनन करना और मनन करते–करते भगवान के स्वरस में तल्लीन हो जाना ही स्मरण भक्ति है।

महाकवि माघ के कीर्तन में स्मरण भी समाविष्ट है। श्रीकृष्ण को बार–बार स्मरण करना तो उनका स्वभाव ही बन गया था। वह तदैव सर्वगुण सम्पन्न भगवान् कृष्ण को स्मरण किया करते थे।

श्री कृष्ण के प्रति युधिष्ठिर आदि पाण्डवों का जो भाव है, वह कुछ–कुछ सख्य भक्ति से मिलता हुआ है। इस भक्ति में भक्त अपना तन–मन–धन श्रद्धा और प्रेम पूर्वक भगवान् के चरणों में समर्पित कर देता हैं

कवि ने जहाँ श्री कृष्ण को पूज्यतम व्यक्ति बताया है, वहाँ यज्ञ की निर्विघ्न समाप्ति का सारा श्रेय कृष्ण भगवान्को समर्पित कर दिया है। पाण्डवों ने श्रीकृष्ण के परामर्श को स्वीकार करके अपना सारा चित्रण, नीति तथा धर्मादि ईश्वरार्पित कर दिये हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कवि की भक्ति भावना का स्वरूप कीर्तन तथा स्मरण भक्ति के अन्तर्गत आता हैं

विष्णु के भक्त होने के साथ–साथ भगवान् शिव का भी उन्होने नाना रूपों में चित्रण किया है। अतः शिवभक्त के रूप में भी वे हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं

"नवानधोऽधे वृहतः पयोधरान्
समूढकर्पूरपरागपाण्डुरम्।
वर्ण क्षमंत्विप्तगजेकन्द्रकृतित्सना
स्फुटोपमं भूतिसितेन शम्भुना।।" 14

कवि पर्वतराज रैवतक पर्वत को भगवान् शंकर के रूप में प्रस्तुत किया है।15

निम्नलिखित श्लोक में रैवतक पर्वत की सफेद दीवार को जो सुवर्ण की रेखा से सुशोभित है, भगवान त्रिनेत्र शंकर की भॉति दिखाकर कवि ने शिव का स्मरण करा दिया है –

"उच्चैमैहारजतराजिविराजितासौ
दुर्वर्णभित्तिरिह सान्द्रसुधासवर्णा।
अभ्येति भस्मपरिपाण्डुरितस्मरारै–
रूदवन्हिलोचनललामललाटलीलाम्।।"16

कवि को आकाश में भी भगवान शंकर का स्वरूप ही दिखाई देता है।

"कलया तुषारकिरणस्य पुरः परिमन्दभिन्नतिमिरोघजटम।
क्षणमभ्यपपत जनैर्न मृषा गगनं गणाधिपतिमूर्तिरिति।।" 17

शंकर की आठवीं मूर्ति का स्मरण निम्नलिखित श्लोक में किया गया है–

"आमनेन शशिनः कलां दधददर्शनक्षयितकामविग्रहः।
आप्लुतः स विमलैर्जलेरभूदष्टमूर्तिधरमूर्तिरष्टमी"।। 18

यमुना के नीले जल को देखकर कवि को शिवजी का स्मरण अनायास ही हो जाता है क्योंकि उनका कंठ भी नीला है–

"व्यक्तं बलीयान्यदि हेतुराग–
मादपूरयत्ता जलधिं न जान्हवी।
गांगोघनिर्भस्मितशम्भुंकन्धरा–
सवर्णमर्णः कथमन्ययास्य तत्।।" 19

श्रीकृष्ण रथ पर बैठ गए। युधिष्ठिर ने उनके घोड़ों की लगाम को पकड़ लिया। कवि को प्रतीत होता है कि मानो शंकर जी के घोड़ों की लगाम को ब्रह्मा ने पकड़ रखा है। यहाँ पर भी कवि को त्रिपुरासुर के ऊपर आक्रमण करने वाले शिव की स्मृति हो आती है–

रथमास्थितस्य च पुराभिवर्तिन–
सिस्ततृणां पुरामिव रिपोमुरैद्विषः।
अथ धर्ममूर्तिरनुरागभावितः
स्वयमादित प्रवयणं प्रजापतिः।। 20

संदर्भ ग्रंथ–

1. पुरूष सूक्त – 1, 2
2. हिरण्यगर्भ सूक्त – 1, 2, 5
3. श्वेताश्वतर उपनिषद् – 6/8–10
4. शुक्ल यजुर्वेद – 32/4
5. शिशुपालवधम् – 3/22
6. शिशुपालवधम् – 3/65
7. शिशुपालवधम् – 1/34, 14/43, 71
8. शिशुपालवधम् – 1/47, 14/72
9. शिशुपालवधम् – 14/74–86
10. श्रीमद्भागवत् – 7.5, 23–24
11. शिशुपालवधम् – 16/5,6
12. शिशुपालवधम् – 20/66
13. शिशुपालवधम् – 14/58–63
14. शिशुपालवधम् – 1/4

15. शिशुपालवधम् — 4 / 19, 65
16. शिशुपालवधम् — 4 / 28
17. शिशुपालवधम् — 9 / 27
18. शिशुपालवधम् — 14 / 18
19. शिशुपालवधम् — 12 / 69
20. शिशुपालवधम् — 13 / 19